

ग्रीन डेपॉजिट

स्रोत: बज़िनेस लाइन

भारत में मूल्य निर्धारण संबंधी मुद्दों, लोगों की अपर्याप्त सहभागिता और नज़ी बैंकों की सीमिति रुचिके कारण ग्रीन डेपॉजिट के स्वीकरण की गतिमंद है।

- **ग्रीन डेपॉजिट:** ये सौर ऊर्जा, स्वच्छ परिवहन और सतत जल प्रबंधन जैसी **हरित परियोजनाओं** के **वित्तपोषण** के लिये निर्धारित ब्याज-युक्त जमा राशियाँ हैं।
 - जून 2023 में, **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)** ने **स्थायी निवेश को बढ़ावा देने के लिये ग्रीन डेपॉजिट** हेतु एक **रूपरेखा तैयार की**।
 - हालाँकि, SBI जैसे बैंकों में इसको लेकर सीमिति रुचि देखी गई है, क्योंकि उनकी ब्याज दरें नियमित जमाओं के मुकाबले प्रतिस्पर्धी नहीं हैं।
- **ग्रीन डेपॉजिट संबंधी चुनौतियाँ:** नियमित जमा की तुलना में ग्रीन डेपॉजिट पर कम ब्याज दरें ग्राहकों को हतोत्साहित करती हैं।
 - बैंकों को यह परिभाषित करने में कठिनाई होती है कि कौन सी गतिविधियाँ "हरित" मानी जाएंगी तथा हरित निवेश के लिये स्पष्ट रूपरेखा का भी अभाव है।
 - ग्रीन डेपॉजिट के लिये **आकर्षक नकदी नधि अनुपात (CRR)** की आवश्यकता अधिक है, जो अधिक ग्राहकों को आकर्षित करने में बाधा बन सकती है।
- **ग्रीन डेपॉजिट के प्रति भारत की प्रतिबद्धता:** **भारत का लक्ष्य वर्ष 2070 तक कार्बन तटस्थता लक्ष्यों की पूर्ति** करना है तथा इस परिवर्तन में **हरित वित्त महत्वपूर्ण होगा**।

और पढ़ें: [RBI का ग्रीन डेपॉजिट फ्रेमवर्क](#)